Notification no. – COE/Ph.D./(Notification)/519/2022

Notification Date – 23/08/2022

Research Scholar - Rakesh Pandey

Supervisor – Prof. Chandra Dev Singh Yadav

Department – Hindi

Title – REETIKALEEN PREMAKHYANAK KAVYA KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN

संक्षिप्त शोध सार

प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रेम ही सर्वोपरि है। भारतीय परंपरा के प्रेमाख्यानों में शुद्ध प्रेम का वर्णन है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में अलौकिक प्रेम का वर्णन लौकिक प्रेम के माध्यम से किया गया है। भारतीय परंपरा के प्रेमाख्यानों में किसी दार्शनिक मतवाद का आग्रह नहीं है। इन काव्यों में प्रेम की उत्पत्ति प्रत्यक्ष दर्शन या कलाओं के माध्यम से होती है। प्रेमी-प्रेमिका प्रायः कलाओं में निपुण होते हैं। कवियों ने कलाओं का भी बारीकी से वर्णन किया है। माधवानल-कामकंदला में नायक-नायिका में प्रेम का उदय प्रत्यक्ष-दर्शन और नृत्यकला तथा वादन कला के द्वारा हुआ है। प्रेम की उत्पत्ति के बाद विरह और कठिनाइयों का सभी कवियों ने एक समान रूप से वर्णन किया है। लौकिक मिलन, प्रेम की शाश्वतता और मानव प्रवृत्तियों की स्वाभाविकता पर भारतीय परंपरा के प्रेमाख्यानकों में अधिक बल है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की प्रसिद्धि का आधार ही प्रेम है। सभी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के लौकिक प्रेम में अलौकिक प्रेम का स्वरूप है। प्रेम के स्वरूप में दार्शनिक मतवाद का आग्रह है। यहाँ सूफीमत के अनुसार प्रेम का स्वरूप दिखाना अभीष्ट है। हंस-जवाहिर और अनुराग-बांसुरी में भी प्रेम का स्वरूप सूफीमत के अनुसार ही है। इन दोनों रचनाओं में प्रेम का उदय रूप-गुण के वर्णन से हुआ है। जिस प्रकार सूफीमत अपने उत्तरार्द्ध में ह्रासावस्था में चला गया और धर्म की उदारता कम होकर रूढ़िवादिता बढ़ने लगी वैसे ही इन रचनाओं में भी धर्म की उदारता कम हुई और रूढ़िवादिता बढ़ने लगी। प्रेम-मार्ग में विरह और कठिनाइयों तथा श्रृंगारिकता का वर्णन करते समय रीतिकाल का प्रभाव अधिक पड़ा है। यद्यपि रीतिकालीन श्रृंगार की मांसलता और उहात्मकता का इन रचनाओं पर संक्रामक प्रभाव परिलक्षित होता है। हंस जवाहिर में बारहमासा का वर्णन है जबकि अनुराग बांसुरी में बारहमासा का वर्णन नहीं है। हंस जवाहिर में नायक-नायिका के लौकिक मिलन के बाद कथा को दुखान्त करते हुए आत्मा-परमात्मा के एकमेक का वर्णन है। अनुराग-बांसुरी और हंस जवाहिर दोनों में मिलन के समय संयोग श्रृंगार का संयमित वर्णन है। अनुराग बांसुरी की कथा का समापन संयोग सुख पर हुआ है। यहाँ इश्क मजाजी से इश्क हकीकी तक की यात्रा, मानव प्रेम से ईश्वर प्रेम की प्राप्ति की यात्रा है। यद्यपि इनके यहां ईश्वरीय प्रेम के लिए सांसारिक प्रेम भी अनिवार्य है। सूफीमत का प्रेम ईशावास्योपनिषद के शब्दों में त्याग रूपी भोग है। प्रेम करो पर सांसारिक वासनाओं में बंधने तक ही नहीं।

नूर मोहम्मद पर धार्मिक कट्टरता का आरोप लगता रहा है। गहराई से जाँच करने पर पता चलता है कि वे कट्टर नहीं बल्कि धर्म की कट्टरता से डरे हुए हैं। अनुराग बांसुरी में इस्लाम की स्वाभाविक मान्यताएं जितनी आई हैं उसी का अधिक वर्णन मिलता है। रचना के अंत में कुछ अतिरिक्त धार्मिक प्रयास अवश्य है। शेष वर्णन उनका स्वाभाविक कवि का वर्णन है। नूर मुहम्मद पर कट्टरता का आरोप अर्द्धसत्य है। तत्कालीन समय के भाषा विवाद और उसका सांप्रदायिक स्वरुप का भी परिचय मिलता है।